

Fourth Series, Vol. XLVI No. 15 **Thursday, November 30, 1970**
Agrahayana 9, 1892 (Saka)

LOK SABHA DEBATES

Twelfth Session



सत्यमेव जयते

LOK SABHA SECRETARIAT
New Delhi

CONTENTS

No. 15,—Monday, November 30, 1970/Agrahayana 9, 1892 (Saka)

COLUMNS

Obituary Reference—

Death of Shri Thirumala Rao	1
Shrimati Indira Gandhi	2—3
Dr. Ram Subhag Singh	3
Shri M. R. Masani	3—4
Shri Balraj Madhok	4—5
Shri Sezhiyan	5
Shri Umanath	...	—	5—6
Shri Rabi Ray	6
Shri Ishaq Sambhli	6—7
Shri Surendranath Dwivedy	7—8
Shri Dattatraya Kunte	8
Shri M. Muhammad Ismail	8
Shri Krishna Kumar Chatterji	9—10

LOK SABHA

*Monday, November 30, 1970/
Agrahayana 9, 1892 (SAKA).*

*The Lok Sabha met at Eleven
of the Clock.*

[MR. SPEAKER in the Chair]

OBITUARY REFERENCE

DEATH OF SHRI THIRUMALA RAO

MR. SPEAKER : Hon. Members, I have to inform the House of the sad demise of Shri M. Thirumala Rao who passed away yesterday morning at New Delhi at the age of 69.

Shri Rao was a sitting Member of this House from Kakinada constituency of Andhra Pradesh. He was a veteran freedom-fighter, one of the seniormost Members of this House, and started his parliamentary career in the year 1937 when he was elected to the Central Legislative Assembly. After remaining Member of the Central Legislative Assembly from 1937 to 1940, he was elected to the Constituent Assembly and Provisional Parliament during 1948-52, Second and Third Lok Sabha during 1957-67. He had been Deputy Minister of Food and Agriculture during 1950-52. He held the office of the Lt. Governor of the erstwhile Vindhya Pradesh during 1956.

He was, as I personally knew him, very hardworking, mature and experienced, and a very active parliamentarian, and served on a number of parliamentary committees and guided the deliberations of some of them as their chairman. His contribution as chair-

man of the Estimates Committee was praiseworthy. He was also a member of the panel of chairman for a number of years. He also served on a number of Enquiry Committees appointed by the Government.

Shri Rao was a versatile genius. He was an intellectual, a journalist, and found of religious and spiritual studies. He was so amiable and always had a cheerful disposition. He was loved and respected by all. He was with us, hale and hearty during the major part of the current session, and we could never imagine that he would be snatched away from us so soon.

We deeply mourn the loss of this distinguished friend, and I am sure the House will join me in conveying our condolences to the bereaved family.

THE PRIME MINISTER, MINISTER OF ATOMIC ENERGY, MINISTER OF HOME AFFAIRS AND MINISTER OF PLANNING (SHRIMATI INDIRA GANDHI) : Sir, it is always sad when and old comrade and friend dies. One by one, the old stalwarts are leaving us. As you have said, it is hard to believe that Shri Thirumala Rao is no more. He was busy only a couple of weeks ago, and even during his illness, I am told, he kept up his interest in parliamentary and other national affairs.

Shri Thirumala Rao was one of the veterans of our struggle for freedom, and one of the seniormost Members of Parliament. He was a very active Member, and in a career of more than 30 years, he made distinctive contributions to debates in the House and to committee work. Conscientious about his responsibilities, he always up held the proprieties of this House.

[Shrimati Indira Gandhi]

He was a fine representative of our tradition, soft-spoken, yet firm, knowledgeable, cheerful and always placing national interest above the sectional. That was why he was greatly liked and deeply respected by all sections of the House. His interests were wide-ranging. Outside the House, he guided a large number of institutions.

We all mourn his passing away. May I request you, Mr. Speaker, to convey our sincere condolences to the bereaved family ?

डा० राम सुभग सिंह (बक्सर) : श्रीमान, मैं विरोधी पक्ष की ओर से श्री तिरुमल राव के देहावसान पर हार्दिक दुःख प्रकट करता हूँ और अध्यक्ष महोदय से निवेदन करता हूँ कि उन के शोक संतप्त परिवार को हमारी ओर से समवेदना का संदेश पहुँचा दें।

जैसा कि आपने कहा श्री तिरुमल राव इस सदन के वरिष्ठ सदस्य थे और जहाँ कहीं उन्होंने काम किया सदा उन की यह भावना रहती थी कि देशहित को आगे बढ़ायें। केन्द्रीय असेम्बली और बाद में प्राविजनल पार्लियामेंट और उस के बाद यहाँ लोक सभा में और कुछ दिनों तक विन्ध्यप्रदेश के उपराज्यपाल की हँसियत से उन्होंने जो देश की सेवा की है उस की सर्वत्र सराहना होती है। श्री तिरुमल राव यहाँ एक ऐसे सदस्य थे जिनका सबके प्रति स्नेह था और वह बराबर सारे सदस्यों के साथ मैत्री भावना रखते थे। अभी यह विश्वास नहीं होता कि वे हम से बिछड़ गये मगर ऐसे वक्त पर क्रूर काल ने उन को हम से छीन लिया है जिस वक्त उन की बहुत ज्यादा जरूरत थी। आगे जैसा कि मैंने पहले बताया विरोधी पक्ष की ओर से कृपया उन के शोक संतप्त परिवार के लोगों तक हम लोगों की समवेदना पहुँचा दें। भगवान से हमारी प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

SHRI M. R. MASANI (Rajkot) : Mr. Speaker, Sir, I would like to associate myself, on behalf of my Party, with what has

fallen from your lips and those of the Leader of the House and the Leader of the Opposition. There is not very much that one can add to what you have all said, but it is with some personal sadness that I say these few words.

As the Prime Minister has just observed, one by one the old familiar faces are disappearing, and those of us who belonging to the pre-Independence generation naturally feel forlorn at this development.

My association with Shri Thirumala Rao goes way back 23 years when he joined the Constituent Assembly. From that they till now, although we did cross swords on more than one occasion on the floor of the House, we had the most cordial and friendly personal relations. That was some thing that marked his behaviour with all of us, wherever we might be sitting in this House. I associate my Party and myself with what has been said, and we join the rest of the House in mourning the loss of our old colleague.

श्री बलराज मधोक (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, श्री तिरुमल राव के निधन से इस सदन का एक और वरिष्ठ और वयोवृद्ध नेता सदा के लिए हम से बिछड़ गया है। वैसे तो काल की गति में जो आता है वह जाता है परन्तु इस प्रकार के सदस्य जो पार्टी की भावना से ऊपर उठ कर भी राष्ट्र हित में देश हित में विचार करते हैं ऐसे सदस्यों की ओर ऐसे लोगी की संख्या देश में कम होती जा रही है। जब इस प्रकार का कोई सदस्य अपने में से बिछड़ जाता है तो उस से केवल यह सदन ही पुनः नहीं होता अपितु उस से सारे देश की भी क्षति पहुँचती है।

अभी पिछले सप्ताह ही मैं काकिनाडा में था जो उन की कांस्टीटुएँसी थी। मुझे यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि वहाँ को जनता में सभी प्रकार के लोग उन को बड़े आदर की भावना से देखते थे। यहाँ भी जन के सम्म

हमारा कई वर्षों से सम्बन्ध है। वह हमेशा हंसमुख रहा करते थे और हर बात पर बड़ी गम्भीरता से अपने विचार देते थे और अपनी मार्गदर्शन भी देते थे यंगर मॅम्बर्स के लिए मानो एक प्रकार वह मार्गदर्शक ही थे।

पिछले कुछ वर्षों से वह कुछ अनमने रहते थे और उस अनमनेपन का कारण भी था परन्तु वह अपने दिल की बात को मुँह पर लाने में क्षिप्त होते थे। परन्तु यह स्पष्ट था कि उन के मन में एक प्रकार का द्वन्द्व चलता रहता था। कई बार इन दिनों उनसे चर्चा हुई और मैं कह नहीं सकता कि उन के निधन में इस प्रकार जो मन का द्वन्द्व था वह भी कारण बना हो। जो कुछ भी हो इस प्रकार से हमारे वयोवृद्ध साथी का हम से बिछड़ जाना एक बहुत ही शोक की बात है। यह इस शोक के अवसर पर अपनी व अपने दल की ओर से हार्दिक समवेदना प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि अध्यक्ष महोदय कृपा करके हमारी इस समवेदना को उन के दुःखी व शोक संतप्त परिवार के लोगों तक पहुँचा देंगे।

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam) : I associate my party and myself with the sentiments expressed by you and the Leader of the House.

Mr. Thirumala Rao was a veteran freedom fighter and a senior parliamentarian. He had the respect of all the sections of this House. In whatever party he functioned and whatever deliberations he joined, he brought with him sagacity and sobriety, and get respect from all sections and Members of the House.

I request you to convey our deep condolences to the bereaved family on behalf of our party.

SHRI UMANATH (Pudukkottai) : On behalf of my party, I associate myself with the sentiments expressed here at the sad

demise of Mr. Thirumala Rao. I request you to convey our sincere condolences to the bereaved family.

श्री रवि राय (पुरी) : अध्यक्ष महोदय, अभी आप, सदन की नैत्री और विरोधी दल के नेता ने श्री तिरुमल राव जी के निधन पर जो भाव व्यक्त किये हैं मैं अपने तथा अपने दल को उनके साथ सम्बद्ध करता हूँ। श्री तिरुमल राव जी इस सदन के माननीय सदस्य थे और 37 साल से संसद में काम करते चले आ रहे थे। वह राष्ट्रीय आन्दोलन के बहुत नामी नेता थे और उनका निधन सारे सदन और सारे राष्ट्र की बहुत बड़ी हानि है। मैं चाहूँगा कि आप उन के शोक संतप्त परिवार तक हमारी संवेदना पहुँचा दें।

श्री इसहाक सम्मली (अमरोहा) : अध्यक्ष महोदय, श्री तिरुमल राव जी के बारे में जिन जजबात का इजहार यहां किया गया है, मेरी पार्टी और मैं उस में शरीक हूँ। श्री तिरुमल राव जी की मौत से जो एक धक्का लगा है मैं समझता हूँ कि उस को आसानी से भुला या नहीं जा सकता। हमारी, हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई के रहुनुमा बहुत कम रह गये हैं और उन में भी जब कोई जाते हैं तो ऐसा मालूम पड़ता है कि तारीख का एक वक़्त खत्म हो गया।

श्री तिरुमल राव हिन्दुस्तान की आजादी के रहुनुमाओं में ही नहीं थे, वह बहुत अच्छे साथी और बहुत अच्छे दोस्त, बहुत अच्छे गाइड थे। मुझे उन के साथ एस्टिमेट्स कमेटी में रहने और काम करने का मौका मिला। हमारे उन के दम्पति एस्कलाफ भी हो जाता था, लेकिन उस के बाद बड़ी खूबसूरती के साथ वह उस को निभा लेते थे। खुद मान लेते थे या मनवा लेते थे। मालूम होता था जैसे हम सब एक खानदान हैं।

मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से उन के लिये अकीदत पेश करता हूँ

[श्री इसहाक सम्भली]

घोर उम्मीद करता हूँ कि आप हमारे जजबात
उन के खानदान तक पहुँचा देंगे ।

اسحاق سنبھلی (امروہا) - ادھیکش مہوہے۔ شری
نزول راؤ جن کے بارے میں جتنے جذبات کا اظہار کیا
گیا ہے میری پارٹی اور میں اس میں شریک ہیں۔
شری نزول راؤ جن کی موت سے جو ایک دھکا لگے
بھی سمجھتا ہوں کہ اس کو آسانی سے بھلا یا نہیں جاسکتا۔
ہماری ہندوستان کی آزادی کی لڑائی کے لیے جہاں بہت
کم رہ گئے ہیں۔ اور ان میں بھی جب کوئی مجاہد ہے
تو ایسا معلوم پڑتا ہے کہ تاریخ کا ایک ورق ختم ہو گیا
شری نزول راؤ جی ہندوستان کی آزادی کے
رہنماؤں میں ہی نہیں تھے۔ وہ بہت اچھے ساتھی
اور بہت اچھے دوست۔ بہت اچھے گائیڈ تھے۔
مجھے ان کے ساتھ ایٹمیٹ کمیٹی میں رہنے اور
کام کرنے کا موقع ملا۔ ہمارے ان کے درمیان اختلاف
بھی ہو جاتا تھا۔ لیکن اس کے بعد بڑی خوبصورتی
کے ساتھ وہ اس کو نباہ لیتے تھے۔ خود مان لیتے
تھے۔ معلوم ہوتا تھا جیسے ہم سب ایک خاندان
ہیں۔

میں اپنی طرف سے اور اپنی پارٹی کی طرف سے
ان کے عقیدت پیش کرتا ہوں اور امید کرتا
ہوں کہ آپ ہمارے جذبات ان کے خاندان تک
پہنچا دیں گے۔

SHRI SURENDRANATH DWIVEDY
(Kendrapara) : I associate myself and my
party with the sentiments expressed at the
sad demise of our valued colleague, Mr. Thiru-
mala Rao. We were known to each other for
many years. As a valiant fighter for freedom
and as an old parliamentarian, he was very
sad and was expressing a feeling of concern
at the growing indiscipline not only in this
House but outside also.

Although he had differences with many
on many matters, as you know he was a
pleasant personality who had very good
personal relationship with all of us and with
other colleagues who have known him in
this House.

He has served the country in many
capacities. Both in the Committees of parlia-
ment and in the administrative jobs that he
held, he has rendered valuable services to
the country.

We all feel sorry at the loss of such a
colleague at this critical juncture of our
country. We mourn his death and we re-
quest you to convey the condolences of our
party to the bereaved family.

SHRI DATTATRAYA KUNTE (Ko-
laba) : I associate myself and my party
with the sentiments expressed about the
late Mr. Thirumala Rao. Mr. Thirumala Rao
was known to me personally as one of the
freedom fighters, and later on he distinguished
himself as an able parliamentarian. He had
imbibed the good traditions that a parlia-
mentarian should have. In his passing away,
this House has suffered a great loss and the
country has also lost a great freedom fig-
hter. I join the House in sending our con-
dolences.

SHRI M. MUHAMMAD ISMAIL
(Manjeri) : Sir, Mr. Thirumala Rao was a
fine and sober person, having a smile and
good word to everyone he met. He joined
the freedom struggle in his very young days
and has been imprisoned several times.
But this experience could make any change
in the affable nature of his character.
He was uniformly good to the people with
whom he was acquainted. Even as a jour-
nalist which he was in Madras, he could not
find a hard word to say even against his
opponents.

His death is a real loss to the House as
well as to Society. I associate myself and
my party with the appreciative sentiments
expressed in the House and request that my
party's condolences and mine may be con-
veyed to the Members of the bereaved family.

SHRI KRISHNA KUMAR CHATTERJI (Howrah) : Mr. Speaker, although it is the convention of this House that only leaders of parties speak on such sad occasions like this, Shri Thirumala Rao was my friend philosopher and guide in many matters, political and personal and therefore I shall crave your indulgence to say a few words. We are fast losing a galaxy of prominent leaders in this country and we are overawed what will be the consequence of losing in such quick succession of great men in this country. He was great in every thing. He lived in an unostentatious manner but was determined in will when matters of policy come to be concerned. I feel that today we are in deep anguish, not by losing the Chairman of the Estimates Committee we have a great parliamentarian, but because and have lost a great man in heart who could have delivered many good things. whenever I rejected about condition in my State it was he who put strength in me not to succumb to any kind of pessimistic ideas. A few days earlier when I talked to him about conditions in the country it was again he who put strength in my mind to carry on. Inter-mingled with his political convictions

were strong spiritual convictions there was an intermixture of the two in him. May God give his soul rest and peace, because I know that the conditions in the country today were creating anguish in his mind.

MR. SPEAKER : We shall stand for a while as a mark of respect.

The Hon. Members then Stood in Silence for short a while

MR. SPEAKER : As a mark of respect to the departed soul, the House will stand adjourned till Wednesday, December 2, 1970.

The meeting of the leaders fixed for to-day in Chamber will be held on the afternoon of 2nd November.

11.20 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till eleven of the Clock on Wednesday December 2, 1970/Agrahayana 11, 1892 (SAKA).